3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

बाल शहीदों की गौरव गाथा।

कन्हाईलाल दत्त

रविचन्द्र गुप्ता

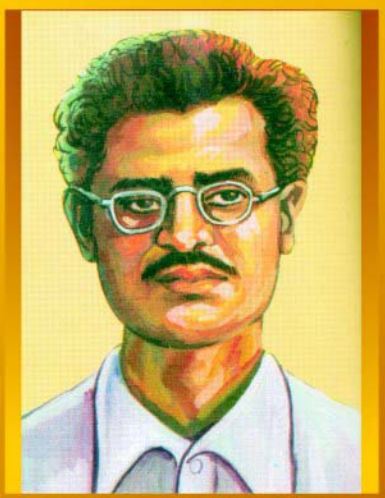

कन्हाईलाल दत्त का जन्म सन् १८८८ में कृष्ण जन्माष्टमी के दिन चन्द्रनगर (पं. बंगाल) में हुआ था। मातृभूमि की आजादी की खातिर अलीपुर बम केस में ३८ क्रांतिवीरों पर फाँसी की तलवार लटकी हुई थी, क्योंकि नरेन्द्र गोसांईं उनके विरुद्ध गवाही देने के लिए सरकारी गवाह बन गया था। अ

रहते हुए नरेन्द्र गोसांईं का वध करने की सोच ली। उसने सत्येन्द्र बसु व भूपसिंह (विजय सिंह पथिक) को अपनी योजना में शामिल किया। नरेन्द्र गोसांईं को सुरक्षा घेरे में अस्पताल में रखा गया था। कन्हाईलाल दत्त भी पेट दर्द के बहाने अस्पताल में दाखिल हो गया। सत्येन्द्र बसु का लिखा पत्र कन्हाई ने नरेन्द्र गोसांईं को दिया। इसमें लिखा था – 'भाई नरेन्द्र, मैं भी सरकारी गवाह बनना चाहता हूँ। तुम किसी तरह मेरे को कोई रास्ता सुझाओ।' नरेन्द्र ने पुलिस की मदद से सत्येन्द्र को अस्पताल बुलाया। सत्येन्द्र, नरेन्द्र व कन्हाईलाल अस्पताल में इकट्ठे हो गए। इसी मुलाकात में सत्येन्द्र एवं कन्हाई लाल दत्त ने अपनी बगल में छिपी पिस्तौल से नरेन्द्र की हत्या कर दी। नरेन्द्र गोसांईं की हत्या हो जाने के कारण ३८ राजबंदियों को फाँसी से बचा लिया गया।

नरेन्द्र की हत्या के अभियोग में कन्हाईलाल ने १० नवम्बर एवं सत्येन्द्रबसु ने २१ नवम्बर, १९०८ को फाँसी का फंदा चूम कर शहादत प्राप्त की। कन्हाईलाल की कुर्बानी के कारण उसकी यशधारा से सारा भारत प्रभावित था। उसकी शवयात्रा में ५० हजार से भी अधिक लोग सम्मिलत थे। उसकी शव यात्रा में लोगों के उफान को देख ब्रिटिश सरकार ने भविष्य में शहीदों का शवदाह जेल में ही करने का निश्चय किया। लेकिन इस निश्चय का पूर्णत: पालन न हो सका। कन्हाईलाल दत्त ने केवल बीस वर्ष की आयु में शहादत प्राप्त की।

● दिल्ली